DR. SUSHILA NAYAR: Sir, I am surprised at Mr. Mani who is such an eminent scholar. Can you refer a case to the Medical Council for punishment without first proving the case? The police is investigating the case. One man who himself happens to be a medical practitioner has made an allegation that there are three other medical practitioners who are involved in this racket. Now the police must investigate it, the case must be proved before it can go to the Medical Council.

SHRI A. D. MANI: Is it a fact that the Member-Secretary of this Commission submitted a dissenting note to the Report stating that many of the recommendations of the Commission have been unnecessarily watered down?

DR. SUSHILA NAYAR: No, Sir. I am not aware of this dissenting note.

SHRI FARIDUL HAQ ANSARI: May I remind the hon. Minister that she herself in this House admitted that spurious drugs are sold in Delhi? What steps has she taken to stop the sale of these drugs?

DR. SUSHILA NAYAR: Sir, if the hon. Member puts a separate question I will be glad to answer about Delhi or any other part of India. This question relates to the West Bengal Enquiry Commission's Report and I have submitted the answer.

SHRI CHANDRA SHEKHAR: When was this Report submitted to the Government and for how long this enquiry has been going on?

DR. SUSHILA NAYAR: We received a copy of this Report only a few days back. I am afraid I do not know the date on which it was submitted to the West Bengal Government.

दिल्ली की मिन्टो रोड के मकान

*२१०. **श्री विमलकुमार मन्नालालजी चोरड़िया :** क्या निर्माण तथा आवास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :.

(क) दिल्ली के मिन्टो रोड क्षेत्र वाले मकानों को किन किन कारणों से तोड़ा जा रहा है;

(ख) इन मकानो की आयु कितनी थी ;

(ग) जब आरम्भ मे ये मकान बनाये गये थे तो इन की आयु कितनी निर्धारित की गई थी;

(घ) जिन लोगों को वहा से विस्थापित किया जा रहा है उन्हें कहां कहा कितनी दूरी पर मकान दिये जा रहे है; और

(ङ) इन को मकान देने में इस बात का ध्यान रखा गया है या नही कि उन के निवास से कार्यालय कितनी दूर होंगे ?

†[HOUSES ON MINTO ROAD, DELHI

*210. SHRI V. M. CHORDIA: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

(a) the reasons for which the houses in the Minto Road area of Delhi are being pulled down;

(b) the period for which these houses have been in existence;

(c) the life fixed for these houses when they were originally constructed;

(d) the names of the areas, along with their respective distances, in which the residents thus displaced are being provided with residential accommodation; and

(e) whether due consideration has been given to the distance between the office and the places of residence allotted to these persons?]

†[ ] English translation.

निर्माण तथा आवास मन्त्री (श्री मेहर चन्द खन्ना) (क) ये मकान बहुत पुराने हो चके है और खतरनाक हालत मे है । मास्टर प्लान की सिफारिशो के अनुसार उस जगह का धीरे धीरे हिस्सो, मे, दुबारा डेवलप किया जा रहा हैं ।

(ख) ३० से ३५ साल ।

(ग) २५ से ३० साल ।

(घ) जहा तक मुमकिन होता है निवासियो को बदले मे उसी इलाके मे दूसरा मकान देने की कोशिश की जाती है । यदि वहा पर रहने की जगह न हो तब जहा कही भी जगह खाली होती है, उन्हे दी जाती है ।

(ङ) नही, दिल्ली मे रहने की जगह की बहुत ज्यादा कमी होने की वजह से यह मुमकिन नही है ।

†[THE MINISTER OF WORKS AND HOUSING (SHRI MEHR CHAND KHANNA). (a) The houses have outlived their life and have been declared dangerous The area is being redeveloped in phases in accordance with the recommendations of the Master Plan.

(b) 30 to 35 years.

(c) 25 to 30 years.

(d) Alternative accommodation is being provided to the residents, as far as possible, in the Minto Road area itself Failing that, accommodation is provided in other areas wherever vacancies become available.

(e) No, this is not possible in view of acute shortage of accommodation in Delhi]

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान यह बतलायेगे कि कोटला रोड पर जो मकानात थे वहा से उन मे रहने वाले कर्मचारियो को इसलिये निकाल दिया गया कि वह मकान रहने के काबिल नही है और वही मकान फिर मैडिकल कालेज के स्टाफ के लोगो को दिया गया, तो इस का क्या कारण है ?

श्री मेहर चन्द खन्ना : इस खास केस को तो मै नही जानता अगर माननीय सदस्य मुझे लिख देगे तो मै इन्क्वायरी करा लूगा । लेकिन मै एक चीज साफ करना चाहता हूं और वह यह है कि जब मकान डैजरस हो जाता है, खतरनाक हो जाता है, जब यह डिक्लेयर हो जाता है कि यह मकान अनसेफ है तो हमारे लिये यह जरूरी है कि उस मकान को खाली करावे और उसे खाली करवा कर उस का जायज इतजाम करे ? भगवान न करे कि किसी कर्मचारी के घर मे फोर्ट एक्सीडेंट हो जाय तो फिर आप जानते हैं कि मेरी जिम्मेदारी पार्लियामेंट के सामने है । तो यह तो नही हो सकता कि मकान डैजरस हो जाय, सी० पी० डब्ल्यू० डी० उसे डैजरस डिक्लेयर करे और उसे खाली न कराये । दूसरी चीज जो मै कहना चाहता हू वह यह है कि ये मकान ३०, ३२, या ३५ वर्ष पहले बने थे और उस वक्त की हालत मे और आज की हालत मे बहुत फर्क है, वह पुरानी दिल्ली थी अब नई दिल्ली बन चुकी है । पापुलेशन का काफी प्रैशर है । तो हम यह कर रहे है कि जहा एक-मंजिला मकान वहा तीन, चार, छ या आठ मंजिला बना रहे हैं, एक मकान गिरा कर पाच और मकान बना रहे है । साथ ही जब किसी गवर्नमेंट सर्वेंट को वहा से ले जाते है तो उस को यह तसल्ली देते हैं कि जब मकान बन जायगा तब अगर वह उसी मकान मे वापस आना चाहे तो आ सकेगा । हम ने पचकुई रोड मे ऐसा किया है, जिन को ले गये थे उन को वापिस ले आये है । तो इसके लिये हमारी मुजम्मत नही होनी चाहिये बल्कि मैं तो यह चाहता हू कि आप हमे सपोर्ट दें । दिल्ली मे यह समस्या पैदा हुई है अगर हमे फाइनेंस मिनिस्टर रुपया दे, सी० पी० डब्ल्यू० डी० काम करे और आप की रिपोर्ट

† [ ] English translation.

हो तो फिर यह प्राबल्म बहुत जल्दी हल हो सकती है ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान यह बतायेंगे कि जब हमारे देश में ग्रामीण क्षेत्रों के कमजोर से कमजोर मिट्टी के भी बने हुए मकान काफी वर्षों तक चलते हैं, २५, ३० वर्ष या इस से ज्यादा चलते हैं और जो पक्के बने हुए मकान हैं वे पीढ़ियों तक चलते है, डेढ़ सौ या दो सौ वर्ष तक चलते हैं तब क्या कारण है कि अपने यहां बढ़िया इन्जीनियर्स होते हुए भी और बढ़िया मैटीरियल सप्लाई होने के बाद भी इन की आयु २५ या ३० वर्ष ही रहती है ?

श्री मेहर चन्द खन्ना : जनाब, जब मकान बनाया जाता है तो उन के स्पेसिफिकेशंस का फैसला होता है कि उन का क्या स्पेसिफिकेशन होगा और कैसा होगा । आज से ३० वर्ष पहले इन्हें जब अंग्रेजों ने बनाया तब उन्हों ने उस वक्त के अपने ख्याल से, अपनी जरूरत से इन्हें बनाया और वैसा ही उन्होंने स्पेसिफिकेशन बनाया और मेरे ख्याल मे उस स्पेसिफिकेशन के मुताबिक जो लाइफ थी वह २५, ३० वर्ष थी । आज हम जो मकान बना रहे हैं उन की लाइफ कम से कम ४०, ५०, ६०, ७०, ८० वर्ष होगी और इसलिये हम चाहते हैं कि फाउन्डेशन अच्छी हो, मैटीरियल अच्छा हो और मकानात की लाइफ ज्यादा हो । यह तो उस के मैटीरिल पर है, अगर सस्ता मकान बनायेंगे तो उस की जिन्दगी थोड़ी होगी और अगर ज्यादा पैसा खर्च होगा तो उस की जिन्दगी बड़ी होगी । यह इंजीनियर्स का कसूर नहीं है, हां अगर एडमिनिस्ट्रेशन का हो तो हो ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान यह बतायेंगे कि मिंटो रोड़ क्षेत्र में कई मकान तीन चार वर्षों से खाली पड़े हैं और उन को न तो आप तोड़ते हैं, न उस जगह पर दूसरा बनाते हैं और न किसी को देते हैं । कई कर्मचारियों ने ऐसा भी कहा कि हम स्वयं की रिस्क पर रहेंगे और इस की कम्पलीट रिपेयर करवा कर काम में लेंगे लेकिन फिर भी न तो उन को आप तोड़ते हैं और न दूसरा बनाते हैं तो इस का क्या कारण है ?

श्री मेहर चन्द खन्ना : यह दुरुस्त है कि कुछ मकान तीन चार वर्ष से खाली पड़े हैं । लेकिन जब कभी भी बनाने का सवाल आता है तो सब की ज्यादातर कोशिश यही होती है कि हमें यहां रहने दिया जाय, हम को और जगह न ले जाया जाय । फिर हम यह देखते हैं कि अगर इस की मरम्मत की जाय तो यह एकानामिकल होगा या नहीं और जब हम इस तसल्ली पर पहुंच जाते हैं कि ये मकान मरम्मत के काबिल नहीं हैं और अगर इन की मरम्मत की जाय तो इसकी कास्ट बहुत ज्यादा होगी तब हमें फैसला करना पड़ता है । मेरी अब कोशिश यह है—बदकिस्मती से मुझे यह काम तो करना पड़ता है, डाक्टर साहब यहां बठे हैं, हमें यह फैसला करना पड़ता है कि फिजीशियन का काम तो यहां है नही यहां तो सर्जन की जरूरत है—इन को फिर से बनाया जाय और इस तरह से इस को हल करना चाहते हैं ।

श्री रामकुमार भुवालका : क्या माननीय मन्त्री महोदय जानते है कि कलकत्ते में अंग्रेजों के बनाए हुए सैकड़ों वर्ष पुराने मकान हैं और उन को कोई नुकसान नहीं हुआ है ? अभी मंत्री महोदय ने कहा कि इन्हें अंग्रेजों ने ३०, ३५ वर्ष के लायक ही बनाया । तो मैं पूछना चाहता हूं कि क्या अंग्रेजों के बनाए हुए मकानों को किसी जगह तोड़ा है, क्या कलकत्ते में या किसी म्युनिसपैलिटी ने यह कहा हो कि २५, ३० वर्ष के बाद यह मकान बेकार हैं और इन्हें तोड़ा हो, क्या ऐसी बात है ।

श्री मेहर चन्द खन्ना : मैंने तो ऐसा कुछ नहीं कहा । कलकत्ते में बहुत अच्छे मकान हैं, कलकत्ते में लोग भी बड़े धनाढ्य हैं, कलकत्ते में अच्छे २ मुहल्ले हैं मै सात वर्ष वहा रहा हूं लेकिन कलकत्ते में झुग्गी और

झोपड़ी भी हैं जिन की जिन्दगी १५ या २० वर्ष ही है मगर वहां और दूसरे मकान भी हैं, जालान साहब या जाजोरिया साहब भी वहां रहते हैं। वे मकान ५०, ७० या ८० वर्ष के होंगे। लेकिन इन का स्पेसिफिकेशन कमजोर था, अच्छा नहीं था इसलिये जल्दी गिराना पड़ा।

SHRI AKBAR ALI KHAN: What steps the hon. Minister is taking, in addition to improving the material, to improve the human material regarding the efficiency and integrity of the C.P.W.D.?

SHRI MEHR CHAND KHANNA: As far as the C.P.W.D. is concerned, I can assure the House that I am taking fairly active and strong measures. I have had meetings with the builders. The Home Minister himself has taken interest in the matter. I have also had meetings with my own staff. We are trying to tie up all the loose ends and see that the quality of work improves and corruption, both amongst the staff and the builders, goes down as far as possible, taking the human element in the country and the general social level into consideration.

श्री गिरिराज किशोर कपूर : क्या मंत्री महोदय यह बतायेंगे कि इन सब मकानों के गिराने में कितना खर्चा आयेगा ?

श्री मेहर चन्द खन्ना : मकानों के गिराने में तो बहुत थोड़ा खर्चा आयेगा लेकिन बनाने में काफी खर्चा होगा।

श्री गिरिराज किशोर कपूर : मेरा सवाल यह है कि गिराने मे कितना खर्च होगा।

श्री मेहर चन्द खन्ना : मैं अर्ज करता हूं। मकान को गिराने के लिये हम उस की सर्वे रिपोर्ट बनाते हैं और सर्वे रिपोर्ट बनने के बाद हम टेंडर इनवाइट करते हैं और जो भी उस मलबे के लिये ज्यादा टेंडर देता है उस को हम यह काम देते हैं। जहां तक खर्चे का ताल्लुक है इन मकानों पर ७० या ८० लाख बनाने पर खर्च होगा। मैं अभी कागज को देख कर के आप को बताता हूं ? तो, पहले फेज में ये ६१६ मकान हैं और इन ६१६ मकानों को बनाने का जो पहला फेज है उस में ७५ या ८० लाख रुपया खर्च होगा। करीब करीब इतना रुपया इन ६०० के करीब मकानों को बनाने में खर्च होगा। गिराने के बारे में मैं ने अर्ज किया कि हमें सर्वे रिपोर्ट बनानी पड़ती है। जो मकान हम गिरा रहे हैं उन की तादाद तकरीबन ११६ है और जो मकान बना रहे हैं उन की तादाद करीब ६१६ है यानी १००, सवा सौ की जगह छः सौ मकान बनेंगे गिराने के लिये हर एक मकान की सर्वे रिपोर्ट होती है और सर्वे रिपोर्ट मे मलबे का जो दिया होता है उस के मुताबिक टेंडर मागा जाता है। इसकी कीमत बहुत थोड़ी होगी, कोई ज्यादा नहीं होगी।

श्री गिरिराज किशोर कपूर : शायद मंत्री महोदय ने मेरा सवाल समझा नहीं।

श्री मेहर चन्द खन्ना : मेरी बदकिस्मती है।

SHRI CHANDRA SHEKHAR: The hon. Member asked a specific question. The Minister cannot evade the answer, and we are not interested in the process of how he prepares the report and all that. We want to know the cost of demolition of the house.

MR. CHAIRMAN: He said that it was a small amount.

SHRI CHANDRA SHEKHAR: Small amount means some amount, and that amount should be known to the House.

SHRI MEHR CHAND KHANNA: I have tried to answer the question in my beautiful Hindi. Perhaps it is not intelligible to the hon. Member who spoke in English. I might say for

his information that as far as these houses are concerned they are old houses built 35 years ago. They have outlived their life. The only value of the houses is "malba". I have never hidden any information from the House. I volunteer more information than what is needed.

श्री चन्द्र शेखर : मैं हिन्दी समझता हूं

SHRI MEHR CHAND KHANNA: I think I have been misunderstood when I spoke in Hindi.

श्री चन्द्र शेखर : नहीं जनाबेवाला मेरा कहना यह है कि डिमालिशन की स्कीम को आपरेशन में लाने के पहले जनाब वजीर साहब ने कुछ उस पर हिसाब किताब लगाया होगा और उस के बाद उस स्कीम को पास किया होगा । तो जब कोई माननीय सदस्य यह जानना चाहते हैं कि उस स्कीम के ऊपर कितना खर्चा होगा तो जनाब वजीर साहब को यह तकलीफ गवारा करनी चाहिये कि वे बतायें कि कितने रुपये उस मकान को गिराने पर खर्च होंगे ?

MR. CHAIRMAN: He wants to know, if you have the information, what would be the cost of demolishing the houses.

श्री मेहर चन्द खन्ना : मैं अर्ज कर रहा था कि जो ११५ मकान है इन को गिराने की कीमत क्या है इस के आंकड़े मेरे पास नही हैं । अभी मैं अंग्रेजी में आप के सवाल का जवाब दे चुका हूं ।

श्री गिरिराज किशोर कपूर : मकान न हिन्दी में गिरेंगे न अंग्रेजी में गिरेंगे । हम को तो जवाब चाहिये ।

MR. CHAIRMAN: You please sit down.

श्री मेहर चन्द खन्ना : मुझ से इस वक्त अगर पूछा जाय कि ११५ मकानों के मलबे की क्या कीमत है तो वह फिगर्स तो मेरे पास नहीं हैं ।

FOURTH FIVE YEAR PLAN

*211. SHRI M. C. SHAH: Will the Minister of PLANNING be pleased to state:

(a) whether a meeting of the Planning Commission was held in May, 1964; and

(b) if so, whether any decisions regarding some basic features of the Fourth Five Year Plan were taken at this meeting?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI T. T. KRISHNAMACHARI): (a) Yes. Sir. A full meeting of the Planning Commission was held on May 10, 1964 *at the late Prime Minister's residence.*

(b) The meeting considered general policy matters relating to the formulating of the Fourth Plan.

SHRI M. C. SHAH: May I konw whether the Planning Commission has taken a decision to take some effective steps to check the spiral of high prices and to make the essential Commodities available to the common man at reasonable prices within his means?

SHRI T. T. KRISHNAMACHARI: The Planning Commission can only consider and make suggestions. The task of taking effective steps happens to be that of the administration.

SHRI S. N. MISHRA: May I know whether at that meeting or at subsequent meetings of the Planning Commission the main objectives that would govern the formulation of the Fourth Five Year Plan were laid down? If so, would the Minister kindly indicate them briefly?

SHRI T. T. KRISHNAMACHARI: It would take a long time because the Planning Commission had prepared a paper, outlining roughly some of the perspective projects regarding the Fourth Plan and the various items were explained by the respective Members. The Prime Minister wanted the whole thing to be co-ordinated